## Chapter अड़सठ

# साम्ब का विवाह

इस अध्याय में बतलाया गया है कि कौरवों ने किस तरह साम्ब को बन्दी बनाया और बलदेव ने किस तरह उसे छुड़ाने के लिए हस्तिनापुर नगरी को खींच डाला।

जाम्बवती का प्रिय पुत्र साम्ब दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा को स्वयंवर सभा से बलपूर्वक भगा ले गया। कौरवों ने बदला लेने के लिए सेना जुटा कर उसे बन्दी बनाना चाहा। कुछ काल तक साम्ब उन सबों से अकेला लड़ता रहा और उसने आगे बढ़ने से रोके रखा किन्तु छः कौरव योद्धाओं ने उसे विरथ कर दिया, उसका धनुष तोड़ डाला और उसे पकड़ कर बाँध लिया। वे उसे तथा लक्ष्मणा को हस्तिनापुर वापस ले आये।

जब राजा उग्रसेन ने साम्ब के बन्दी बनाये जाने का समाचार सुना तो उन्होंने बदला लेने के लिए यादवों को बुलाया। वे सब क्रुद्ध होकर युद्ध करने के लिए तैयार हो गये किन्तु बलराम ने इस आशा से उन्हें शान्त करना चाहा कि कुरु तथा यदुवंशों के बीच कलह न हो। अतः वे अनेक ब्राह्मणों तथा वृद्ध यादवों को साथ लेकर हस्तिनापुर के लिए रवाना हो गये।

यादवों की टोली ने नगर के बाहर एक उद्यान में डेरा डाल दिया और बलराम ने राजा धृतराष्ट्र की

मनोवृत्ति जानने के लिए उद्धव को भेजा। जब उद्धव ने कौरव दरबार में जाकर बलराम के आगमन की घोषणा की तो कौरवों ने उद्धव की पूजा की और अपने साथ मांगलिक उपहार लेकर बलराम से मिलने गये। कौरवों ने अनुष्ठानों तथा आदर-सामग्री से बलराम का सत्कार किया किन्तु जब उन्होंने उग्रसेन की यह माँग पेश की कि साम्ब को मुक्त कर दिया जाय तो वे सभी नाराज हो गये। उन्होंने कहा, ''यह विचित्र बात है कि यादवगण कौरवों को आदेश देने का प्रयास कर रहे हैं। यह तो पाँव की जूती के किसी के सिर पर चढ़ने जैसा है। हमारे ही बल पर इन यादवों को राज-सिंहासन प्राप्त हुआ है। फिर भी वे अब अपने आप को हमारे समान समझने लगे हैं। अब हम उन्हें राज-सुविधाएँ देने से बाज आये।''

यह कह कर कौरवों के सरदार अपने नगर के भीतर चले गये। बलराम ने तय किया कि मिथ्या गर्व से उन्मत्त लोगों से निपटने का एकमात्र उपाय है कि उन्हें कठिन दण्ड दिया जाय। अतएव उन्होंने अपना हल उठाया और पृथ्वी को सभी कुरुओं से विहीन बनाने की इच्छा से हस्तिनापुर को गंगा की ओर खींचने लगे। यह देखकर कि उनका नगर नदी में गिरने ही वाला है, भयभीत कौरवों ने तुरन्त साम्ब तथा लक्ष्मणा को लाकर बलराम के समक्ष प्रस्तुत किया और उनका यशोगान करने लगे। उन्होंने प्रार्थना की, ''हे प्रभु! हमें क्षमा कर दें क्योंकि हम आपके असली स्वरूप से अनजान थे।''

बलराम ने कौरवों को आश्वासन दिया कि वे उन्हें क्षति नहीं पहुँचायेंगे। दुर्योधन ने अपनी पुत्री तथा अपने नवीन दामाद को विविध वस्तुएँ दहेज में भेंट कीं। फिर दुर्योधन ने यादवों का सत्कार करते हुए बलदेव से प्रार्थना की कि वे साम्ब तथा लक्ष्मणा को लेकर द्वारका लौट जाँय।

श्रीशुक उवाच
**दुर्योधनसुतां राजन्लक्ष्मणां समितिंजयः ।**
**स्वयंवरस्थामहरत्साम्बो जाम्बवतीसुतः ॥ १ ॥**

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; दुर्योधन-सुताम्—दुर्योधन की पुत्री; राजन्—हे राजा ( परीक्षित ); लक्ष्मणाम्—लक्ष्मणा को; समितिम्-जयः—युद्ध में विजयी; स्वयं-वर—स्वयंवर समारोह में; स्थाम्—स्थित; अहरत्—चुरा लिया; साम्बः—साम्ब ने; जाम्बवती-सुतः—जाम्बवती का पुत्र।.

**शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हे राजन्, जाम्बवती के पुत्र साम्ब ने जो सदैव युद्ध में विजयी होता था, दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा का उसके स्वयंवर समारोह से अपहरण कर लिया।**

**तात्पर्य :** *भगवान् श्रीकृष्ण* में श्रील प्रभुपाद ने इस घटना का विवरण इस प्रकार दिया है : ''धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा विवाह के योग्य थी। वह कुरुवंश की एक अत्यन्त सुयोग्य कन्या थी और अनेक राजकुमार उससे विवाह करने के इच्छुक थे। ऐसी दशा में स्वयंवर संस्कार का आयोजन किया जाता है, जिससे कन्या अपनी रुचि के अनुसार वर का चुनाव कर सके। जब लक्ष्मणा स्वयंवर सभा में वर चुनने जा रही थी तभी साम्ब उस सभा में उपस्थित हुआ। साम्ब भगवान् श्रीकृष्ण की प्रमुख रानियों में से एक, श्रीमती जाम्बवती का पुत्र था। साम्ब को यह नाम इसलिए दिया गया था क्योंकि अति दुष्ट बालक होने से वह सदैव अपनी माता के पास रहता था। साम्ब नाम सूचित करता है कि यह पुत्र अपनी माता का लाडला था। *अम्बा* का अर्थ है ''माता'' और *स* का अर्थ है ''साथ।'' अतएव साम्ब को यह विशेष नाम इसलिए दिया गया क्योंकि वह सदैव अपनी माता के साथ रहता था। इसीलिए वह जाम्बवती-सुत भी कहलाता था। जैसाकि पहले बताया जा चुका है श्रीकृष्ण के सारे पुत्र अपने महान् पिता भगवान् कृष्ण के ही समान योग्य थे। यद्यपि लक्ष्मणा साम्ब से विवाह करने की इच्छुक नहीं थी तथापि साम्ब दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा को प्राप्त करना चाहता था। इसलिए साम्ब ने स्वयंवर समारोह से लक्ष्मणा का बलपूर्वक अपहरण कर लिया।''

**कौरवाः कुपिता ऊचुर्दुर्विनीतोऽयमर्भकः ।**
**कदर्थीकृत्य नः कन्यामकामामहरद्बलात् ॥ २ ॥**

शब्दार्थ

कौरवाः—कुरुओं ने; कुपिताः—क्रुद्ध; ऊचुः—कहा; दुर्विनीतः—बुरे आचरण वाला; अयम्—यह; अर्भकः—बालक; कदर्थी-कृत्य—अपमानित करके; नः—हमको; कन्याम्—कुमारी लड़की को; अकामाम्—अनचाहे; अहरत्—ले गया; बलात्—बलपूर्वक।

**क्रुद्ध कौरवों ने कहा : इस बुरे आचरण वाले बालक ने हमारी अविवाहिता कन्या को उसकी इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक हर कर हमारा अपमान किया है।**

**बध्नीतेमं दुर्विनीतं किं करिष्यन्ति वृष्णयः ।**
**येऽस्मत्प्रसादोपचितां दत्तां नो भुञ्जते महीम् ॥ ३ ॥**

शब्दार्थ

बध्नीत—बन्दी बना लो; इमम्—इस; दुर्विनीतम्—बुरे आचरण वाले को; किम्—क्या; करिष्यन्ति—कर लेंगे; वृष्णयः—वृष्णिजन; ये—जो; अस्मत्—हमारी; प्रसाद—कृपा से; उपचिताम्—अर्जित; दत्ताम्—प्रदत्त; नः—हमारा; भुञ्जते—भोग रहे हैं; महीम्—पृथ्वी को।

**बुरे आचरण वाले इस साम्ब को बन्दी बना लो। आखिर वृष्णिजन हमारा क्या कर लेंगे? वे हमारी ही कृपा से हमारे द्वारा प्रदत्त पृथ्वी पर शासन कर रहे हैं।**

**निगृहीतं सुतं श्रुत्वा यद्येष्यन्तीह वृष्णयः ।**
**भग्नदर्पाः शमं यान्ति प्राणा इव सुसंयताः ॥ ४॥**

शब्दार्थ

निगृहीतम्—बन्दी बनाया; सुतम्—अपने पुत्र को; श्रुत्वा—सुन कर; यदि—यदि; एष्यन्ति—आयेंगे; इह—यहाँ; वृष्णयः—वृष्णिजन; भग्न—चूर चूर; दर्पाः—जिनका घमंड; शमम्—शान्ति; यान्ति—प्राप्त करेंगे; प्राणाः—इन्द्रियाँ; इव—सदृश; सु—उचित रीति से; संयताः—वशीभूत।

**यदि वृष्णि लोग यह सुनकर कि उनका पुत्र पकड़ा गया है यहाँ आते हैं, तो हम उनके घमंड को तोड़ डालेंगे। इस प्रकार से वे उसी तरह दमित हो जायेंगे जिस तरह कठोर नियंत्रण के अन्तर्गत शारीरिक इन्द्रियाँ दमित हो जाती हैं।**

**इति कर्णः शलो भूरिर्यज्ञकेतुः सुयोधनः ।**
**साम्बमारेभिरे योद्धुं कुरुवृद्धानुमोदिताः ॥ ५॥**

शब्दार्थ

इति—यह कह कर; कर्णः शलः भूरिः—कर्ण, शल तथा भूरि ( सौमदत्ति ); यज्ञकेतुः सुयोधनः—यज्ञकेतु ( भूरिश्रवा ) तथा दुर्योधन; साम्बम्—साम्ब के विरुद्ध; आरेभिरे—रवाना हो गये; योद्धुम्—युद्ध करने के लिए; कुरु-वृद्ध—कुरुओं के गुरुजन ( भीष्म ) द्वारा; अनुमोदिताः—स्वीकृति दिये जाने पर।

**यह कह कर तथा कुरुवंश के वयोवृद्ध सदस्य द्वारा अपनी योजना की स्वीकृति लेने पर कर्ण, शल, भूरि, यज्ञकेतु तथा सुयोधन साम्ब पर आक्रमण करने के लिए कूच कर गए।**

**तात्पर्य :** श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती बतलाते हैं कि यहाँ पर जिस कुरु-वृद्ध का उल्लेख है, वह भीष्म हैं जिन्होंने अपने कनिष्टजनों को इस प्रकार अनुमति दी, ''चूँकि साम्ब ने इस कुमारी का स्पर्श कर लिया है अतएव यह दूसरा पति स्वीकार नहीं कर सकती। उसे ही इसका पति बनना होगा। तो भी तुम इसे बन्दी बना लो और इससे अपने अनुचित कार्य एवं हमारे पराक्रम के विषय में वक्तव्य दिला दो। लेकिन उसे किसी भी हालत में जान से न मारा जाय।'' आचार्य का यह भी कहना है कि भीष्म इस श्लोक में वर्णित पाँचों योद्धाओं के साथ गये।

**दृष्ट्वानुधावतः साम्बो धार्तराष्ट्रान्महारथः ।**
**प्रगृह्य रुचिरं चापं तस्थौ सिंह इवैकलः ॥ ६॥**

शब्दार्थ

दृष्ट्वा—देख कर; अनुधावतः—अपनी ओर दौड़ते हुए; साम्बः—साम्ब; धार्तराष्ट्रान्—धृतराष्ट्र के अनुयायियों को; महारथः—महान् रथ-योद्धा; प्रगृह्य—पकड़ कर; रुचिरम्—सुन्दर; चापम्—अपना धनुष; तस्थौ—खड़ा रहा; सिंहः—सिंह; इव—सदृश; एकलः—अकेला।

**दुर्योधन तथा उसके साथियों को अपनी ओर दौड़ते देखकर, महारथी साम्ब ने अपना सुन्दर धनुष धारण कर लिया और वह सिंह की तरह अकेला खड़ा हो गया।**

**तं ते जिघृक्षवः क्रुद्धास्तिष्ठ तिष्ठेति भाषिणः ।**
**आसाद्य धन्विनो बाणैः कर्णाग्रण्यः समाकिरन् ॥ ७॥**

शब्दार्थ

तम्—उसको; ते—वे; जिघृक्षवः—पकड़ने के लिए दृढ़-संकल्प; क्रुद्धाः—क्रुद्ध; तिष्ठ तिष्ठ इति—जरा ठहरो, ठहरो; भाषिणः—कहते हुए; आसाद्य—सामने आकर; धन्विनः—धनुर्धर; बाणैः—अपने बाणों से; कर्ण-अग्रण्यः—कर्ण इत्यादि ने; समाकिरन्—उस पर वर्षा की।

**पकड़ने के लिए कृतसंकल्प, क्रुद्ध कर्ण इत्यादि धनुर्धरों ने जोर-जोर से साम्ब से कहा, ''ठहरो और युद्ध करो, ठहरो और युद्ध करो।'' वे उसके पास आये और उस पर बाणों की वर्षा करने लगे।**

**सोऽपविद्धः कुरुश्रेष्ठ कुरुभिर्यदुनन्दनः ।**
**नामृष्यत्तदचिन्त्यार्भः सिंह क्षुद्रमृगैरिव ॥ ८॥**

शब्दार्थ

सः—वह; अपविद्धः—अन्यायपूर्वक आक्रमण किया गया; कुरु-श्रेष्ठ—हे कुरु-श्रेष्ठ ( परीक्षित महाराज ); कुरुभिः—कुरुओं द्वारा; यदु-नन्दनः—यदुकुल के प्रिय पुत्र ने; न अमृष्यत्—सहन नहीं किया; तत्—उसे; अचिन्त्य—भगवान् कृष्ण का; अर्भः—बालक; सिंहः—सिंह; क्षुद्र—नगण्य; मृगैः—पशुओं द्वारा; इव—सदृश।

**हे कुरु-श्रेष्ठ, चूँकि कृष्ण के पुत्र साम्ब को कुरुगण अनैतिक रीति से तंग कर रहे थे अतः यदुकुल का वह प्रिय पुत्र उनके आक्रमण को सहन नहीं कर सका जिस तरह एक सिंह क्षुद्र पशुओं के आक्रमण को सहन नहीं कर पाता।**

**तात्पर्य :** *अचिन्त्यार्भ* शब्द की टीका करते हुए, लीला पुरुषोत्तम *भगवान् श्रीकृष्ण* में श्रील प्रभुपाद ने लिखा है : ''भगवान् श्रीकृष्ण के पुत्र-रूप में यदुवंश का गौरवपूर्ण पुत्र साम्ब अचिन्त्य शक्तियों से समन्वित था।''

**विस्फूर्ज्य रुचिरं चापं सर्वान्विव्याध सायकैः ।**

**कर्णादीन्षड्रथान्वीरस्तावद्भिर्युगपत्पृथक् ॥ ९ ॥**
**चतुर्भिश्चतुरो वाहानेकैकेन च सारथीन् ।**
**रथिनश्च महेष्वासांस्तस्य तत्तेऽभ्यपूजयन् ॥ १० ॥**

शब्दार्थ

विस्फूर्ज्य—टंकार करके; रुचिरम्—आकर्षक; चापम्—अपने धनुष को; सर्वान्—सबों को; विव्याध—बेध डाला; सायकैः—बाणों से; कर्ण-आदीन्—कर्ण तथा अन्यों को; षट्—छः; रथान्—रथों को; वीरः—वीर, साम्ब ने; तावद्भिः—उतने ही; युगपत्—एकसाथ; पृथक्—अलग अलग; चतुर्भिः—चार ( बाणों ) से; चतुरः—चार; वाहान्—घोड़ों को ( प्रत्येक रथ के ); एक-एकेन—एक-एक से; च—तथा; सारथीन्—सारथियों को; रथिनः—रथ की बागडोर सँभालने वाले योद्धाओं को; च—तथा; महा-इषु-आसान्—बड़े बड़े धनुर्धरों को; तस्य—उसका; तत्—वह; ते—उन्होंने; अभ्यपूजयन्—आदर किया।

**अपने अद्भुत धनुष को टंकार करके वीर साम्ब ने बाणों से कर्ण आदि छहों योद्धाओं पर प्रहार किया। उसने छहों रथों को उतने ही बाणों से, चारों घोड़ों की टोली को चार बाणों से और प्रत्येक सारथी को एक एक बाण से बेध डाला। इसी तरह उसने रथों की बागडोर सँभालने वाले ( रथी ) महान् धनुर्धरों पर भी प्रहार किया। शत्रु योद्धाओं ने साम्ब को उसके इस पराक्रम प्रदर्शन के लिए बधाई दी।**

**तात्पर्य :** श्रील प्रभुपाद की टीका है : ''जब साम्ब इस प्रकार अकेले ही बड़े पराक्रम से छहों महान् योद्धाओं से युद्ध कर रहा था तब उन योद्धाओं ने बालक साम्ब की अचिन्त्य शक्ति की सराहना की। युद्ध के बीच भी उन्होंने स्पष्टतः स्वीकार किया कि यह बालक साम्ब अद्भुत है।''

**तं तु ते विरथं चक्रुश्चत्वारश्चतुरो हयान् ।**
**एकस्तु सारथिं जघ्ने चिच्छेदन्यः शरासनम् ॥ ११ ॥**

शब्दार्थ

तम्—उसको; तु—लेकिन; ते—उन्होंने; विरथम्—रथविहीन; चक्रुः—किया गया; चत्वारः—चार; चतुरः—उनमें से चार; हयान्—घोड़ों को; एकः—एक ने; तु—तथा; सारथिम्—सारथी को; जघ्ने—मारा; चिछेद—चीर डाला; अन्यः—दूसरा; शर-असनम्—उसके धनुष को।

**किन्तु उन्होंने उसे रथ से नीचे उतरने पर विवश कर दिया और उसके बाद उनमें से चार ने उसके चारों घोड़ों को मार दिया, एक ने उसके सारथी को मार डाला और दूसरे ने उसके धनुष को तोड़ डाला।**

**तं बद्ध्वा विरथीकृत्य कृच्छ्रेण कुरवो युधि ।**
**कुमारं स्वस्य कन्यां च स्वपुरं जयिनोऽविशन् ॥ १२ ॥**

शब्दार्थ

तम्—उसको; बद्ध्वा—बाँधकर; विरथी-कृत्य—उसको रथ से विहीन करके; कृच्छ्रेण—कठिनाई से; कुरवः—कुरुओं ने; युधि—युद्ध में; कुमारम्—कुमार या बालक को; स्वस्य—अपनी; कन्याम्—पुत्री; च—तथा; स्व-पुरम्—अपने नगर; जयिनः—विजयी; अविशन्—प्रवेश किया।

**युद्ध के दौरान साम्ब को रथविहीन करके कुरु-योद्धाओं ने बड़ी मुश्किल से उसे बाँध लिया और तब वे उस कुमार तथा अपनी राजकुमारी को लेकर विजयी भाव से अपने नगर में प्रविष्ट हुए।**

**तच्छ्रुत्वा नारदोक्तेन राजन्सञ्जातमन्यवः ।**
**कुरून्प्रत्युद्यमं चक्रुरुग्रसेनप्रचोदिताः ॥ १३ ॥**

शब्दार्थ

तत्—यह; श्रुत्वा—सुनकर; नारद—नारदमुनि के; उक्तेन—कथनों से; राजन्—हे राजा ( परीक्षित ); सञ्जात—जागा हुआ; मन्यवः—जिसका क्रोध; कुरून्—कुरुओं के; प्रति—प्रति; उद्यमम्—युद्ध की तैयारियाँ; चक्रुः—कीं; उग्रसेन—उग्रसेन द्वारा; प्रचोदिताः—प्रेरित।

**हे राजन्, जब यादवों ने श्री नारद से यह समाचार सुना तो वे क्रुद्ध हो उठे। राजा उग्रसेन द्वारा प्रेरित किये जाने पर उन्होंने कुरुओं के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर ली।**

**तात्पर्य :** श्रील प्रभुपाद लिखते हैं: ''महर्षि नारद ने तुरन्त यदुवंश को जानकारी दी कि साम्ब बन्दी बना लिया गया है। उन्होंने यदुवंशियों को सारी कथा कह सुनाई। साम्ब को छह योद्धाओं द्वारा अनुचित रीति से बन्दी बनाये जाने पर यदुवंशी अत्यधिक क्रुद्ध हो गये। अतः यदुवंश के प्रधान राजा उग्रसेन से अनुमति प्राप्त करके वे कुरुवंश की राजधानी पर आक्रमण करने को तत्पर हो गये।''

**सान्त्वयित्वा तु तान्रामः सन्नद्धान्वृष्णिपुङ्गवान् ।**
**नैच्छत्कुरूणां वृष्णीनां कलिं कलिमलापहः ॥ १४ ॥**
**जगाम हास्तिनपुरं रथेनादित्यवर्चसा ।**
**ब्राह्मणैः कुलवृद्धैश्च वृतश्चन्द्र इव ग्रहैः ॥ १५ ॥**

शब्दार्थ

सान्त्वयित्वा—शान्त करके; तु—लेकिन; तान्—उनको; रामः—बलराम; सन्नद्धान्—कवच पहने; वृष्णि-पुङ्गवान्—वृष्णिवंशी वीरों को; न ऐच्छत्—नहीं चाहा; कुरूणाम् वृष्णीनाम्—कुरुओं तथा वृष्णियों के मध्य; कलिम्—कलह, झगड़ा; कलि—कलह के युग का; मल—कल्मष; अपहः—हटाने वाले; जगाम—गया; हास्तिन-पुरम्—हस्तिनापुर; रथेन—अपने रथ से; आदित्य—सूर्य ( सदृश ); वर्चसा—तेज वाले; ब्राह्मणैः—ब्राह्मणों के साथ; कुल—परिवार के; वृद्धैः—गुरुजनों के साथ; च—तथा; वृतः—घिरे हुए; चन्द्रः—चन्द्रमा; इव—सदृश; ग्रहैः—सात ग्रहों से।

**किन्तु भगवान् बलराम ने वृष्णि-वीरों के क्रोध को शान्त किया जिन्होंने पहले से अपने कवच धारण कर लिये थे। कलह के युग को शुद्ध करने वाले ( बलराम ) कुरुओं तथा वृष्णियों**

**के बीच कलह नहीं चाहते थे। अतः वे ब्राह्मणों तथा परिवार के गुरुजनों ( बड़े-बूढ़ों ) के साथ अपने रथ पर हस्तिनापुर गये। उनका रथ सूर्य की तरह तेजोमय था। जब वे जा रहे थे तो ऐसे लग रहे थे मानो प्रधान ग्रहों द्वारा घिरा चन्द्रमा हो।**

**गत्वा गजाह्वयं रामो बाह्योपवनमास्थितः ।**
**उद्धवं प्रेषयामास धृतराष्ट्रं बुभुत्सया ॥ १६ ॥**

शब्दार्थ

गत्वा—जाकर; गजाह्वयम्—हस्तिनापुर; रामः—बलराम; बाह्य—बाहर; उपवनम्—बगीचे में; आस्थितः—ठहर गये; उद्धवम्—उद्धव को; प्रेषयाम् आस—भेजा; धृतराष्ट्रम्—धृतराष्ट्र के विषय में; बुभुत्सया—जानने की इच्छा से।.

**हस्तिनापुर पहुँचकर बलराम नगर के बाहर एक बगीचे में रह गए और उद्धव को धृतराष्ट्र के इरादों का पता लगाने के लिए आगे भेज दिया।**

**तात्पर्य :** श्रील प्रभुपाद लिखते हैं: ''जब श्री बलराम हस्तिनापुर की सीमा पर पहुँचे तो उन्होंने नगर में प्रवेश नहीं किया अपितु नगर के बाहर एक छोटे-से उद्यान-गृह में डेरा लगा दिया। तब उन्होंने उद्धव से कहा कि वे कुरुवंश के प्रमुखों से भेंट करके उनसे पूछें कि वे यदुवंश से युद्ध करना चाहते हैं या समझौता करना चाहते हैं।''

**सोऽभिवन्द्याम्बिकापुत्रं भीष्मं द्रोणं च बाह्लिकम् ।**
**दुर्योधनं च विधिवद्राममागतं अब्रवीत् ॥ १७॥**

शब्दार्थ

सः—वह, उद्धव; अभिवन्द्य—वन्दना करके; अम्बिका-पुत्रम्—अम्बिका-पुत्र, धृतराष्ट्र को; भीष्मम् द्रोणम् च—भीष्म तथा द्रोण को; बाह्लिकम् दुर्योधनम् च—तथा बाह्लिक और दुर्योधन को; विधि-वत्—शास्त्रों के आदेशानुसार; रामम्—बलराम को; आगतम्—आया हुआ; अब्रवीत्—उसने कहा।.

**अम्बिका-पुत्र ( धृतराष्ट्र ) तथा भीष्म, द्रोण, बाह्लिक तथा दुर्योधन को समुचित आदर देकर उद्धव ने उन्हें बतलाया कि भगवान् बलराम आ गये हैं।**

**तात्पर्य :** श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर इंगित करते हैं कि यहाँ पर उद्धव द्वारा युधिष्ठिर तथा उनके संगियों को नमस्कार किये जाने का उल्लेख नहीं है क्योंकि उन दिनों पाण्डवजन इन्द्रप्रस्थ में ठहरे हुए थे।

**तेऽतिप्रीतास्तमाकर्ण्य प्राप्तं रामं सुहृत्तमम् ।**

**तमर्चयित्वाभिययुः सर्वे मङ्गलपाणयः ॥ १८ ॥**

शब्दार्थ

ते—वे; अति—अत्यन्त; प्रीताः—प्रसन्न; तम्—उससे; आकर्ण्य—सुनकर; प्राप्तम्—आया हुआ; रामम्—बलराम को; सुहृत्-तमम्—अपने प्रियतम मित्र; तम्—उसको, उद्धव को; अर्चयित्वा—पूज कर; अभिययुः—गये; सर्वे—वे सभी; मङ्गल—शुभ भेंटें; पाणयः—अपने हाथों में।

**यह सुनकर कि उनके प्रियतम मित्र बलराम आ चुके हैं, वे अत्यधिक प्रसन्न हुए और सर्वप्रथम उन्होंने उद्धव का आदर किया। तत्पश्चात् वे अपने हाथों में शुभ भेंटें लेकर भगवान् से मिलने गये।**

**तात्पर्य :** *भगवान् श्रीकृष्ण* में श्रील प्रभुपाद लिखते हैं: ''कुरुवंश के प्रधानगण, विशेष रूप से धृतराष्ट्र तथा दुर्योधन अत्यन्त हर्षित थे क्योंकि उन्हें यह भलीभाँति पता था कि भगवान् श्री बलराम उनके परिवार के महान् शुभचिन्तक हैं। यह समाचार सुनकर उनके हर्ष की सीमा न रही अतएव उन्होंने तत्काल उद्धव का स्वागत किया। भगवान् बलराम का उचित स्वागत करने के लिए वे अपने अपने हाथों में उनके स्वागत की शुभ सामग्री ले लेकर उनसे भेंट करने नगरद्वार के बाहर गये।''

**तं सङ्गम्य यथान्यायं गामर्घ्यं च न्यवेदयन् ।**
**तेषां ये तत्प्रभावज्ञाः प्रणेमुः शिरसा बलम् ॥ १९ ॥**

शब्दार्थ

तम्—उसके; सङ्गम्य—पास जाकर; यथा—जिस तरह; न्यायम्—उचित; गाम्—गौवें; अर्घ्यम्—अर्घ्यजल; च—तथा; न्यवेदयन्—भेंट किया; तेषाम्—उनमें से; ये—जो; तत्—उसकी; प्रभाव—शक्ति; ज्ञाः—जानने वाले; प्रणेमुः—प्रणाम किया; शिरसा—अपने सिरों से; बलम्—बलराम को।

**वे भगवान् बलराम के पास गये और गौवों तथा अर्घ्य की भेंटों से, यथोचित विधि से उनकी पूजा की। कुरुओं में से उन लोगों ने जो उनकी असली शक्ति से परिचित थे भूमि को सिर से छू कर उन्हें प्रणाम किया।**

**तात्पर्य :** आचार्यों का कहना है कि भीष्मदेव जैसे गुरुजनों ने भी भगवान् बलदेव को नमस्कार किया।

**बन्धून्कुशलिनः श्रुत्वा पृष्ट्वा शिवमनामयम् ।**
**परस्परमथो रामो बभाषेऽविक्लवं वचः ॥ २० ॥**

शब्दार्थ

बन्धून्—उनके सम्बन्धियों को; कुशलिनः—कुशलपूर्वक; श्रुत्वा—सुनकर; पृष्ट्वा—पूछ कर; शिवम्—उनकी कुशल-मंगल; अनामयम्—तथा स्वास्थ्य; परस्परम्—एक-दूसरे में; अथ उ—तत्पश्चात; रामः—बलराम; बभाषे—बोला; अविक्लवम्—सीधे; वचः—शब्द।

**जब दोनों पक्षों ने सुन लिया कि उनके सम्बन्धीगण कुशल-मंगल से हैं और दोनों ने एक-दूसरे से कुशल-मंगल तथा स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ कर ली तो बलराम ने कुरुओं से सीधे तौर पर इस प्रकार से कहा।**

**तात्पर्य :** श्रील प्रभुपाद लिखते हैं, ''परस्पर एक-दूसरे की कुशलता पूछ कर उन्होंने एक-दूसरे का स्वागत किया और जब यह औपचारिकता पूरी हो गई तो बलराम ने गम्भीर स्वर में तथा अत्यन्त धैर्यपूर्वक उनके विचारार्थ निम्नांकित शब्द प्रस्तुत किये।''

**उग्रसेनः क्षितेशेशो यद्व आज्ञापयत्प्रभुः ।**
**तदव्यग्रधियः श्रुत्वा कुरुध्वमविलम्बितम् ॥ २१ ॥**

शब्दार्थ

उग्रसेनः—राजा उग्रसेन ने; क्षित—पृथ्वी के; ईश—शासकों का; ईशः—शासक; यत्—जो; वः—तुमसे; आज्ञापयत्—यह माँग की है; प्रभुः—हमारे स्वामी; तत्—वह; अव्यग्र-धियः—एकाग्र होकर; श्रुत्वा—सुनकर; कुरुध्वम्—तुम लोगों को करना चाहिए; अविलम्बितम्—बिना देर लगाये।

**[ बलरामजी ने कहा ] : राजा उग्रसेन हमारे स्वामी तथा राजाओं के भी शासक हैं। तुम लोग एकाग्र चित्त से उसे सुन लो जो उन्होंने तुम लोगों को करने के लिए कहा है और तब उसे तुरन्त करो।**

**यद्यूयं बहवस्त्वेकं जित्वाधर्मेण धार्मिकम् ।**
**अबध्नीताथ तन्मृष्ये बन्धूनामैक्यकाम्यया ॥ २२ ॥**

शब्दार्थ

यत्—जो; यूयम्—तुम सभी; बहवः—अनेक; तु—लेकिन; एकम्—एक व्यक्ति को; जित्वा—जीत कर; अधर्मेण—धर्म के विरुद्ध; धार्मिकम्—धर्म का पालन करने वाले को; अबध्नीत—तुमने बाँध लिया है; अथ—ऐसा होते हुए भी; तत्—वह; मृष्ये—मैं सहन कर रहा हूँ; बन्धूनाम्—सम्बन्धियों के बीच; ऐक्य—एकता के लिए; काम्यया—इच्छा से।

**[ राजा उग्रसेन ने कहा है ] : यद्यपि तुम में से कई ने अधर्म का सहारा लेकर धर्म के सिद्धान्तों पर चलने वाले अकेले प्रतिद्वन्द्वी को पराजित किया है फिर भी मैं पारिवारिक सदस्यों में एकता बनाये रखने के लिए यह सब सहन कर रहा हूँ।**

**तात्पर्य :** यहाँ उग्रसेन के कहने का आशय यह है कि कुरु तुरन्त साम्ब को लेकर बलराम को सौंप दें।

**वीर्यशौर्यबलोन्नद्धमात्मशक्तिसमं वचः ।**
**कुरवो बलदेवस्य निशम्योचुः प्रकोपिताः ॥ २३ ॥**

शब्दार्थ

वीर्य—शक्ति; शौर्य—साहस; बल—तथा बल से; उन्नद्धम्—पूरित; आत्म—अपनी; शक्ति—शक्ति; समम्—उपयुक्त; वचः—शब्द; कुरवः—कौरवजन; बलदेवस्य—बलदेव के; निशम्य—सुनकर; ऊचुः—बोले; प्रकोपिताः—क्रुद्ध।

**बलराम के पराक्रम, साहस तथा बल से पूरित एवं उनकी शक्ति के समरुप इन शब्दों को सुनकर कौरवगण क्रुद्ध हो उठे और इस प्रकार बोले।**

**अहो महच्चित्रमिदं कालगत्या दुरत्यया ।**
**आरुरुक्षत्युपानद्वै शिरो मुकुटसेवितम् ॥ २४॥**

शब्दार्थ

अहो—ओह; महत्—अतीव; चित्रम्—आश्चर्य; इदम्—यह; काल—समय की; गत्या—गति से; दुरत्यया—दुर्निवार, दुर्लंघ्य; आरुरक्षति—चोटी पर चढ़ना चाहता है; उपानत्—जूता; वै—निस्सन्देह; शिरः—सिर; मुकुट—मुकुट से युक्त; सेवितम्—सुशोभित।

**[ कुरुनायकों ने कहा ] : ओह, यह कितनी विचित्र बात है! काल की गति निस्सन्देह दुर्लंघ्य है—अब ( पैरों की ) एक जूती उस सिर पर चढ़ना चाहती है, जिसमें राजमुकुट सुशोभित है।**

**तात्पर्य :** *काल-गत्या दुरत्यया* शब्दों से असहिष्णु कुरुगण यह निष्कर्ष निकाल रहे हैं कि अधम कलियुग आने वाला है। यहाँ कुरुगण यह संकेत करते हैं कि अधम कलियुग शुरू हो चुका है क्योंकि वे यह दावा कर रहे हैं कि ''एक जूती उस सिर पर चढ़ना चाहती है, जिस पर राजमुकुट रखा है।'' दूसरे शब्दों में, उन्होंने सोचा कि ये अधम यदुगण राजसी कुरुओं से ऊपर उठ जाना चाहते हैं।

**एते यौनेन सम्बद्धाः सहशय्यासनाशनाः ।**
**वृष्णयस्तुल्यतां नीता अस्मद्दत्तनृपासनाः ॥ २५ ॥**

शब्दार्थ

एते—ये; यौनेन—वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा; सम्बद्धाः—जुड़े हुए; सह—साथ साथ; शय्या—बिस्तर; आसन—आसन; अशनाः—तथा भोजन; वृष्णयः—वृष्णिगण; तुल्यताम्—समानता पर; नीताः—लाये गये; अस्मत्—हमारे द्वारा; दत्त—दिया हुआ; नृप-आसनाः—राज-सिंहासन।

**चूँकि ये वृष्णिजन हमसे वैवाहिक सम्बन्धों से बँधे हैं इसलिए हमने इन्हें अपनी शय्या, आसन तथा भोजन में बराबरी का पद दे रखा है। असल में तो हमीं ने इन्हें राज-सिंहासन प्रदान किया है।**

**चामरव्यजने शङ्खमातपत्रं च पाण्डुरम् ।**
**किरीटमासनं शय्यां भुञ्जतेऽस्मदुपेक्षया ॥ २६ ॥**

शब्दार्थ

चामर—चमरी की पूँछ के बाल के; व्यजने—दो पंखे; शङ्खम्—शंख; आतपत्रम्—छाता; च—तथा; पाण्डुरम्—श्वेत; किरीटम्—मुकुट; आसनम्—आसन; शय्याम्—राजशय्या का; भुञ्जते—भोग करते हैं; अस्मत्—हमारी; उपेक्षया—उपेक्षा से।

**चूँकि हमने परवाह नहीं की इसलिए वे चमरी के पंखे तथा शंख, श्वेत छाता, सिंहासन तथा राजशय्या का भोग कर सके।**

**तात्पर्य :** श्रील प्रभुपाद लिखते हैं कि कुरुगण सोच रहे थे कि ''यदुओं को चाहिए था कि हमारी उपस्थिति में ऐसी राजसी सामग्री का उपयोग न करते किन्तु हमने अपने पारिवारिक सम्बन्धों के कारण उन्हें ऐसा करने से रोका नहीं।'' *अस्मद्-उपेक्षया* शब्दों का प्रयोग करके कुरुगण यह कहना चाहते हैं: ''वे इन राजसी ठाट-बाटों का उपयोग इसलिए कर सके कि हमने इस बात को गम्भीरता से नहीं लिया।'' जैसी कि श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ने व्याख्या की है, कुरुओं ने सोचा, ''उनके द्वारा इन वस्तुओं का उपयोग करने के विषय में चिन्ता करना आदरसूचक हो सकता था किन्तु वास्तव में उनके प्रति हममें ऐसा कोई आदर-भाव नहीं है...चूँकि वे निम्न कुल के हैं अतएव उनका आदर नहीं होना चाहिए अत: हम उनका आदर नहीं करते।''

**अलं यदूनां नरदेवलाञ्छनै-**
**र्दातुः प्रतीपैः फणिनामिवामृतम् ।**
**येऽस्मत्प्रसादोपचिता हि यादवा**
**आज्ञापयन्त्यद्य गतत्रपा बत ॥ २७ ॥**

शब्दार्थ

अलम्—बस; यदूनाम्—यदुओं के लिए; नर-देव—राजाओं के; लाञ्छनैः—प्रतीकों से; दातुः—देने वाले के लिए; प्रतीपैः—विपरीत; फणिनाम्—साँपों के लिए; इव—सदृश; अमृतम्—अमृत; ये—जो; अस्मत्—हमारी; प्रसाद—कृपा से; उपचिताः—समृद्ध बने हुए; हि—निस्सन्देह; यादवाः—यदुगण; आज्ञापयन्ति—आदेश दे रहे हैं; अद्य—अब; गत-त्रपाः—लाज खोकर; बत—निस्सन्देह।

**अब यदुओं को इससे आगे इन राजसी प्रतीकों का उपयोग न करने दिया जाय क्योंकि अब ये प्रदान करने वालों के लिए कष्टप्रद बन रहे हैं जिस तरह विषैले साँपों को पिलाया गया दूध। ये यादवगण हमारी कृपा से समृद्ध बनकर अब सारी लाज शर्म खो चुके हैं और हमें आदेश देने का दुस्साहस कर रहे हैं।**

कथमिन्द्रोऽपि कुरुभिर्भीष्मद्रोणार्जुनादिभिः ।
अदत्तमवरुन्धीत सिंहग्रस्तमिवोरणः ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

कथम्—कैसे; इन्द्रः—इन्द्र; अपि—भी; कुरुभिः—कुरुओं के द्वारा; भीष्म-द्रोण-अर्जुन-आदिभिः—भीष्म, द्रोण, अर्जुन इत्यादि के द्वारा; अदत्तम्—न दिया हुआ; अवरुन्धीत—हड़प कर लेंगे; सिंह—सिंह द्वारा; ग्रस्तम्—पकड़ी गयी; इव—सदृश; उरणः—भेड़, मेमना।

भला इन्द्र भी किसी वस्तु को हड़पने का दुस्साहस कैसे कर सकता है, जिसे भीष्म, द्रोण, अर्जुन या अन्य कुरुजनों ने उसे नहीं दिया है? यह तो वैसा ही है जैसे मेमना सिंह के वध की माँग करे।

श्रीबादरायणिरुवाच
जन्मबन्धुश्रीयोन्नद्धमदास्ते भरतर्षभ ।
आश्राव्य रामं दुर्वाच्यमसभ्याः पुरमाविशन् ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

श्री-बादरायनिः उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; जन्म—जन्म; बन्धु—तथा सम्बन्ध का; श्रीया—ऐश्वर्य से; उन्नद्ध—महान् बनाया गया; मदाः—नशा; ते—वे; भरत-ऋषभ—हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ; आश्राव्य—सुनवाकर; रामम्—बलराम को; दुर्वाच्यम्—कटु वचन; असभ्याः—गँवार व्यक्ति; पुरम्—नगर में; आविशन्—प्रविष्ट हुए।

श्रीबादरायण ने कहा, हे भारतों में श्रेष्ठ, अपने उच्च जन्म तथा सम्बन्धों के ऐश्वर्य से फूल कर कुप्पा हुए घमंडी कुरु जब ये कटु वचन बलराम से कह चुके तो वे अपने नगर को वापस चले गये।

दृष्ट्वा कुरूनां दौःशील्यं श्रुत्वावाच्यानि चाच्युतः ।
अवोचत्कोपसंरब्धो दुष्प्रेक्ष्यः प्रहसन्मुहुः ॥ ३० ॥

शब्दार्थ

दृष्ट्वा—देखकर; कुरूणाम्—कुरुओं का; दौःशील्यम्—दुश्चरित्र; श्रुत्वा—सुनकर; अवाच्यानि—न कहने योग्य शब्द; च—तथा; अच्युतः—अच्युत बलराम ने; अवोचत्—कहा; कोप—क्रोध से; संरब्धः—क्रुद्ध; दुष्प्रेक्ष्यः—देखना कठिन; प्रहसन्—हँसते हुए; मुहुः—बारम्बार।

कुरुओं के दुराचरण को देखकर तथा उनके भद्दे शब्दों को सुनकर अच्युत भगवान् बलराम क्रोध से उबल पड़े। उनका मुखमण्डल देखने में भयावना था और बारम्बार हँसते हुए वे इस प्रकार बोले।

नूनं नानामदोन्नद्धाः शान्तिं नेच्छन्त्यसाधवः ।
तेषां हि प्रशमो दण्डः पशूनां लगुडो यथा ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

नूनम्—निश्चय ही; नाना—विविध; मद—कामवासनाओं से; उन्नद्धाः—फूलकर कुप्पा हुए; शान्तिम्—शान्ति; न इच्छन्ति—इच्छा नहीं करते; असाधवः—बदमाश; तेषाम्—उनके; हि—निस्सन्देह; प्रशमः—समझाना-बुझाना; दण्डः—शारीरिक दण्ड; पशूनाम्—पशुओं के लिए; लगुडः—लाठी; यथा—जिस तरह।

[ भगवान् बलराम ने कहा ] : "स्पष्ट है कि इन बदमाशों की विविध वासनाओं ने इन्हें इतना दम्भी बना दिया है कि वे शान्ति चाहते ही नहीं। तो फिर इन्हें शारीरिक दण्ड द्वारा समझाना-बुझाना होगा जिस तरह लाठी से पशुओं को सीधा किया जाता है।

अहो यदून्सुसंरब्धान्कृष्णं च कुपितं शनैः ।
सान्त्वयित्वाहमेतेषां शममिच्छन्निहागतः ॥ ३२ ॥
त इमे मन्दमतयः कलहाभिरताः खलाः ।
तं मामवज्ञाय मुहुर्दुर्भाषान्मानिनोऽब्रुवन् ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

अहो—ओह; यदून्—यदुओं को; सु-संरब्धान्—क्रोध से उबल रहे; कृष्णम्—कृष्ण को; च—भी; कुपितम्—क्रुद्ध; शनैः—धीरे धीरे; सान्त्वयित्वा—शान्त करके; अहम्—मैं; एतेषाम्—इन ( कौरवों ) के लिए; शमम्—शान्ति; इच्छन्—चाहते हुए; इह—यहाँ; आगतः—आया; ते इमे—वे ही ( कुरुजन ); मन्द-मतयः—दुर्बुद्धि; कलह—झगड़ने के लिए; अभिरताः—इच्छुक, लिप्त; खलाः—दुष्ट; तम्—उसको; माम्—मुझको; अवज्ञाय—अनादर करके; मुहुः—बारम्बार; दुर्भाषान्—कटु वचन; मानिनः—गर्वित होकर; अब्रुवन्—उन्होंने कहे हैं।

"ओह! मैं धीरे धीरे ही क्रुद्ध यदुजनों तथा कृष्ण को भी, जिन्हें क्रोध आ गया था शान्त कर सका था। मैं इन कौरवों के लिए शान्ति की कामना करते हुए यहाँ आया। किन्तु ये इतने मूर्ख, स्वभाव से कलह-प्रिय तथा दुष्ट हैं कि इन्होंने बारम्बार मेरा अनादर किया है। दम्भ के कारण इन्होंने मुझसे कटु वचन कहने का दुस्साहस किया है।

नोग्रसेनः किल विभुर्भोजवृष्ण्यन्धकेश्वरः ।
शक्रादयो लोकपाला यस्यादेशानुवर्तिनः ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

न—नहीं; उग्रसेनः—राजा उग्रसेन; किल—निस्सन्देह; विभुः—आदेश देने के योग्य; भोज-वृष्णि-अन्धक—भोजों, वृष्णियों तथा अन्धकों के; ईश्वरः—स्वामी; शक्र-आदयः—इन्द्र तथा अन्य देवता; लोक—लोकों के; पालाः—शासक; यस्य—जिसकी; आदेश—आज्ञा के; अनुवर्तिनः—अनुयायी।

"क्या भोजों, वृष्णियों तथा अन्धकों के स्वामी राजा उग्रसेन आदेश देने योग्य नहीं हैं जबकि इन्द्र तथा अन्य लोकपालक उनके आदेशों का पालन करते हैं?

**सुधर्माक्रम्यते येन पारिजातोऽमराङ्घ्रिपः ।**
**आनीय भुज्यते सोऽसौ न किलाध्यासनार्हणः ॥ ३५ ॥**

शब्दार्थ

सुधर्मा—स्वर्ग का राज सभाभवन, सुधर्मा; आक्रम्यते—अधिकार में रखता है; येन—जिसके ( कृष्ण ) द्वारा; पारिजातः—पारिजात नामक; अमर—अमर देवताओं का; अङ्घ्रिपः—वृक्ष; आनीय—लाकर; भुज्यते—भोगा जाता है; सः असौ—वही पुरुष; न—नहीं; किल—निस्सन्देह; अध्यासन—उच्च आसन; अर्हणः—योग्य।

**''वही कृष्ण जो सुधर्मा सभाभवन के अधिकारी हैं और जिन्होंने अपने आनन्द के लिए अमर देवताओं से पारिजात वृक्ष ले लिया—क्या वही कृष्ण राजसिंहासन पर बैठने योग्य नहीं हैं?**

**तात्पर्य :** यहाँ बलराम क्रोध में आकर कहते हैं, ''यदुओं पर ध्यान न दें—ये धूर्त कौरव भगवान् कृष्ण तक का अपमान करने का साहस करते हैं!''

**यस्य पादयुगं साक्षाच्छ्रीरुपास्तेऽखिलेश्वरी ।**
**स नार्हति किल श्रीशो नरदेवपरिच्छदान् ॥ ३६ ॥**

शब्दार्थ

यस्य—जिसके; पाद-युगम्—दो पैर; साक्षात्—स्वयं; श्रीः—लक्ष्मीजी; उपास्ते—पूजा करती हैं; अखिल—समस्त ब्रह्माण्ड की; ईश्वरी—स्वामिनी; सः—वह; न अर्हति—योग्य नहीं हैं; किल—निस्सन्देह; श्री-ईशः—लक्ष्मी के पति; नर-देव—मानव राजा की; परिच्छदान्—साज-सामग्री।

**''समस्त ब्रह्माण्ड की स्वामिनी साक्षात् लक्ष्मीजी उनके पैरों की पूजा करती हैं। और उन्हीं लक्ष्मी के पति क्या मर्त्य राजा की साजसामग्री के पात्र नहीं हैं?**

**यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजोऽखिललोकपालै-**
**मौल्युत्तमैर्धृतमुपासिततीर्थतीर्थम् ।**
**ब्रह्मा भवोऽहमपि यस्य कलाः कलायाः**
**श्रीश्चोद्वहेम चिरमस्य नृपासनं क्व ॥ ३७ ॥**

शब्दार्थ

यस्य—जिसके; अङ्घ्रि—पैरों की; पङ्कज—कमल सदृश; रजः—धूल; अखिल—समस्त; लोक—लोकों के; पालैः—शासकों द्वारा; मौलि—मुकुट; उत्तमैः—उत्तम, श्रेष्ठ; धृतम्—धारण किया हुआ; उपासित—पूज्य; तीर्थ—तीर्थस्थानों का; तीर्थम्—तीर्थ, पवित्रता का उद्गम; ब्रह्मा-लोर्द् ब्रह्मा; भवः—ब्रह्मा; अहम्—; अपि—; यस्य—; कलाः—; कलायाः—; श्रीः—; च—; उद्वहेम—; चिरम्—; अस्य—; नृप-आसनम्—; क्व—.

यस्य—जिसके; अङ्घ्र—पैरों की; पङ्कज—कमल सदृश; रजः—धूल; अखिल—समस्त; लोक—लोकों के; पालै—शासकों द्वारा; मौलि—मुकुट; उत्तमै—उत्तम, श्रेष्ठ; धृतम्—धारण किया हुआ; उपासित—पूज्य; तीर्थ—तीर्थस्थानों का; तीर्थम्—तीर्थ,

पवित्रता का उद्गम; ब्रह्मा—ब्रह्मा; भवः—शिव; अहम्—मैं; अपि—भी; यस्य—जिसके; कलाः—अंश; कलाया—अंश के; श्रीः—लक्ष्मी; च—भी; उद्वहेम—धारण करते हैं; चिरम्—निरन्तर; अस्य—उसका; नृप-आसनम्—राजसिंहासन; क्व—कहाँ।

**''कृष्ण के चरण-कमलों की धूल, जो सभी तीर्थस्थानों के लिए पवित्रता की उद्गम है बड़े बड़े देवताओं द्वारा पूजी जाती है। समस्त लोकों के प्रधान देवता उनकी सेवा में लगे रहते हैं और अपने मुकुटों पर कृष्ण के चरणकमलों की धूल धारण करके अपने को परम भाग्यशाली मानते हैं। ब्रह्मा तथा शिवजी जैसे बड़े बड़े देवता, यहाँ तक कि लक्ष्मीजी और मैं भी उनके दिव्य व्यक्तित्व के अंश हैं और हम भी उस धूल को बड़ी सावधानी से अपने सिरों पर धारण करते हैं। क्या इतने पर भी कृष्ण राजप्रतीकों का उपयोग करने या राजसिंहासन पर बैठने के योग्य नहीं हैं?**

**तात्पर्य :** उपर्युक्त भावार्थ श्रील प्रभुपाद कृत *भगवान् कृष्ण* पर आधारित है। श्रील श्रीधर स्वामी के अनुसार यहाँ पर विशेष रूप से उल्लिखित तीर्थस्थान गंगा नदी है। गंगाजल सारे जगत को आप्लावित करता है और चूँकि गंगा कृष्ण के चरणकमलों से निकलती है, अतः इसके तट महान् तीर्थस्थान बन गये हैं।

**भुञ्जते कुरुभिर्दत्तं भूखण्डं वृष्णयः किल ।**
**उपानहः किल वयं स्वयं तु कुरवः शिरः ॥ ३८ ॥**

शब्दार्थ

भुञ्जते—भोग करते हैं; कुरुभिः—कुरुओं द्वारा; दत्तम्—दिया हुआ; भू—भूमि; खण्डम्—सीमित भाग; वृष्णयः—वृष्णिगण; किल—निस्सन्देह; उपानहः—जूते; किल—निस्सन्देह; वयम्—हम; स्वयम्—स्वयं; तु—लेकिन; कुरवः—कुरुगण; शिरः—सिर।

**''हम वृष्णिगण केवल उस छोटे से भूभाग का भोग करते हैं जिस किसी की कुरुगण हमें अनुमति देते हैं? और हम निस्सन्देह जूते हैं जबकि कुरुगण सिर हैं?**

**अहो ऐश्वर्यमत्तानां मत्तानामिव मानिनाम् ।**
**असम्बद्धा गिरश्चओ रुक्षाः कः सहेतानुशासीता ॥ ३९ ॥**

शब्दार्थ

अहो—ओह; ऐश्वर्य—अपनी शासनशक्ति से; मत्तानाम्—उन्मत्तों के; मत्तानाम्—शारीरिक रूप से उन्मत्तों के; इव—मानो; मानिनाम्—अभिमानी; असम्बद्धाः—बेतुके तथा बिना सिर-पैर के; गिरः—शब्द; रुक्षाः—कर्कश; कः—कौन; सहेत—सह सकता है; अनुशासीता—आदेश देने वाला।

**''जरा देखो तो इन अभिमानी कुरुओं को जो सामान्य शराबियों की तरह अपने तथाकथित**

**अधिकार से उन्मत्त हैं! ऐसा कौन वास्तविक शासक, जो आदेश देने के अधिकार से युक्त है, उनके मूर्खतापूर्ण एवं बेतुके शब्दों को सह सकेगा?''**

**अद्य निष्कौरवां पृथ्वीं करिष्यामीत्यमर्षितः ।**
**गृहीत्वा हलमुत्तस्थौ दहन्निव जगत्त्रयम् ॥ ४० ॥**

शब्दार्थ

अद्य—आज; निष्कौरवां—कौरवों से विहीन; पृथ्वीम्—पृथ्वी; करिष्यामि—करूँगा; इति—इस प्रकार कह कर; अमर्षितः—क्रुद्ध; गृहीत्वा—लेकर; हलम्—अपना हल; उत्तस्थौ—उठ खड़े हुए; दहन्—जलाते हुए; इव—मानो; जगत्—लोकों को; त्रयम्—तीनों।

**क्रुद्ध बलराम ने घोषणा की, ''आज मैं पृथ्वी को कौरवों से विहीन कर दूँगा।'' यह कहकर उन्होंने अपना हलायुध ले लिया और उठ खड़े हुए मानो तीनों लोकों को स्वाहा करने जा रहे हों।**

**लाङ्गलाग्रेण नगरमुद्विदार्य गजाह्वयम् ।**
**विचकर्ष स गङ्गायां प्रहरिष्यन्नमर्षितः ॥ ४१ ॥**

शब्दार्थ

लाङ्गल—हल की; अग्रेण—नोक से; नगरम्—नगर को; उद्विदार्य—फाड़कर; गजाह्वयम्—हस्तिनापुर को; विचकर्ष—खींचा; सः—उसने; गङ्गायाम्—गंगा में; प्रहरिष्यन्—फेंकने ही वाले; अमर्षितः—क्रुद्ध।

**भगवान् ने क्रुद्ध होकर अपने हल की नोक से हस्तिनापुर को उखाड़ा और सम्पूर्ण नगर को गंगा नदी में फेंकने की मंशा से उसे घसीटने लगे।**

**तात्पर्य :** श्रील प्रभुपाद लिखते हैं: ''बलराम इतने क्रुद्ध लग रहे थे मानो सारे संसार को जलाकर राख कर देंगे। वे दृढ़तापूर्वक खड़े हो गये और हल को हाथ में लेकर उससे भूमि पर प्रहार करने लगे। इस तरह सम्पूर्ण हस्तिनापुर नगर पृथ्वी से विलग हो गया। तत्पश्चात् बलराम उस नगर को गंगा नदी की बहती जलधारा की ओर घसीटने लगे। इससे पूरे हस्तिनापुर में ऐसा कम्पन हुआ मानो भूकम्प आया हो और ऐसा लगा कि सारा नगर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा।''

श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती कहते हैं कि भगवान् की इच्छा से उनके हल का आकार बढ़ गया और जब बलराम हस्तिनापुर को जल की ओर घसीटने लगे तो उन्होंने गंगा नदी को आदेश दिया, ''तुम साम्ब को छोड़कर सबों पर आक्रमण करो और अपने जल से नगर के हर व्यक्ति को मार डालो।'' इस तरह वे पृथ्वी को कौरवविहीन करने की प्रतिज्ञा पूरी कर सकेंगे और साथ ही आश्वस्त हो रहे थे कि साम्ब को कुछ नहीं होगा।

**जलयानमिवाघूर्णं गङ्गायां नगरं पतत् ।**
**आकृष्यमाणमालोक्य कौरवाः जातसम्भ्रमाः ॥ ४२ ॥**

**तमेव शरणं जग्मुः सकुटुम्बा जिजीविषवः ।**
**सलक्ष्मणं पुरस्कृत्य साम्बं प्राञ्जलयः प्रभुम् ॥ ४३ ॥**

शब्दार्थ

जल-यानम्—नाव, घन्नाई; इव—मानो; आघूर्णम्—इधर-उधर डगमगाती; गङ्गायाम्—गंगा में; नगरम्—नगर को; पतत्—गिरते हुए; आकृष्यमाणम्—खींचे जाकर; आलोक्य—देखकर; कौरवाः—सारे कौरव; जात—होकर; सम्भ्रमाः—उत्तेजित एवं मोहित; तम्—उसकी, बलराम की; एव—निस्सन्देह; शरणम्—शरण के लिए; जग्मुः—गये; स—सहित; कुटुम्बः—उनके परिवार; जिजीविषवः—जीवित रहने की इच्छा करते हुए; स—सहित; लक्ष्मणम्—लक्ष्मणा को; पुरः-कृत्य—आगे करके; साम्बम्—साम्ब को; प्राञ्जलयः—आदरपूर्वक हाथ जोड़ कर; प्रभुम्—प्रभु को।

**घसीटे जा रहे अपने नगर को समुद्र में घन्नाई की तरह डगमगाते तथा गंगा में गिरने ही वाला देखकर, सारे कौरव भयभीत हो उठे। वे अपने प्राण बचाने के लिए अपने साथ अपने परिवारों को लेकर भगवान् की शरण लेने गये। साम्ब तथा लक्ष्मणा को आगे करके उन्होंने विनयपूर्वक अपने हाथ जोड़ लिये।**

**तात्पर्य :** हस्तिनापुर नगर इस तरह डगमगाने लगा मानो तूफानग्रस्त समुद्र में घन्नाई हो। भयभीत कौरवों ने भगवान् को शांत करने के लिए साम्ब तथा लक्ष्मणा को तुरन्त लाकर उनके सामने कर दिया।

**राम रामाखिलाधार प्रभावं न विदाम ते ।**
**मूढानां नः कुबुद्धीनां क्षन्तुमर्हस्यतिक्रमम् ॥ ४४ ॥**

शब्दार्थ

राम राम—हे राम, हे राम; अखिल—हर वस्तु के; आधार—आधार; प्रभावम्—शक्ति; न विदाम—हम नहीं जानते हैं; ते—तुम्हारा; मूढानाम्—मूर्ख बने पुरुषों के; नः—हमको; कु—बुरा; बुद्धीनाम्—बुद्धि वालों के; क्षन्तुम् अर्हसि—कृपया क्षमा कर दें; अतिक्रमम्—अपराध को।

**[ कौरवों ने कहा ] : हे राम, हे सर्वाधार राम, हम आपकी शक्ति के बारे में कुछ भी नहीं जानते। कृपया हमारा अपराध क्षमा कर दें क्योंकि हम अज्ञानी हैं तथा बहकावे में आ गये थे।**

**स्थित्युत्पत्त्यप्ययानां त्वमेको हेतुर्निराश्रयः ।**
**लोकान्क्रीडनकानीश क्रीडतस्ते वदन्ति हि ॥ ४५ ॥**

शब्दार्थ

स्थिति—पालन; उत्पत्ति—सृजन; अप्ययानाम्—तथा संहार के; त्वम्—तुमको; एकः—एकमात्र; हेतुः—कारण; निराश्रयः—किसी अन्य आधार के बिना; लोकान्—लोकों को; क्रीडनकान्—गेंदों को; ईश—हे प्रभु; क्रीडतः—खेल रहे; ते—तुम्हारे; वदन्ति—वे कहते हैं; हि—निस्सन्देह।

**आप अकेले जगत का सृजन, पालन तथा संहार करते हैं और आपका कोई पूर्व हेतु ( कारण ) नहीं है। दरअसल, हे प्रभु, विद्वानों का कहना है कि जब आप अपनी लीलाएँ करते हैं, तो सारे संसार आपके खिलौने जैसे होते हैं।**

**त्वमेव मूर्ध्नीदमनन्त लीलया**
**भूमण्डलं बिभर्षि सहस्रमूर्धन् ।**
**अन्ते च यः स्वात्मनिरुद्धविश्वः**
**शेषेऽद्वितीयः परिशिष्यमाणः ॥ ४६ ॥**

शब्दार्थ

त्वम्—तुम; एव—ही; मूर्ध्नि—सिर पर; इदम्—यह; अनन्त—हे असीम; लीलया—लीला के रूप में, आसानी से; भू—पृथ्वी के; मण्डलम्—गोले को; बिभर्षि—वहन करते हो; सहस्र-मूर्धन्—हे हजार सिरों वाले; अन्ते—अन्त में; च—तथा; यः—जो; स्व—अपना; आत्म—शरीर के भीतर; निरुद्ध—लीन करके; विश्वः—ब्रह्माण्ड; शेषे—लेट जाते हो; अद्वितीयः—अद्वितीय; परिशिष्यमाणः—शेष।.

**हे हजार सिरों वाले अनन्त, आप अपनी लीला के रूप में इस भूमण्डल को अपने एक सिर पर धारण करते हैं। संहार के समय आप सारे ब्रह्माण्ड को अपने शरीर के भीतर लीन कर लेते हैं और अकेले बचकर विश्राम करने के लिए लेट जाते हैं।**

**कोपस्तेऽखिलशिक्षार्थं न द्वेषान्न च मत्सरात् ।**
**बिभ्रतो भगवन्सत्त्वं स्थितिपालनतत्परः ॥ ४७ ॥**

शब्दार्थ

कोपः—क्रोध; ते—तुम्हारा; अखिल—हर एक को; शिक्षा—शिक्षा; अर्थम्—के लिए; न—नहीं; द्वेषात्—घृणा से; न च—न तो; मत्सरात्—ईर्ष्या से; बिभ्रतः—धारण करने वाले; भगवन्—भगवान्; सत्त्वम्—सतोगुण; स्थिति—स्थिति; पालन—तथा रक्षण; तत्-परः—आशय के रूप में।.

**आपका क्रोध हर एक को शिक्षा देने के निमित्त है, यह घृणा या द्वेष की अभिव्यक्ति नहीं हैं। हे परमेश्वर, आप शुद्ध सतोगुण को धारण करते हैं और इस जगत को बनाये रखने तथा इसकी रक्षा करने के लिए ही क्रुद्ध होते हैं।**

**तात्पर्य :** कुरुगण स्वीकार करते हैं कि भगवान् बलराम का क्रोध सब प्रकार से उचित था और वास्तव में उन्हीं के लाभ के लिए था। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती के अनुसार कौरव कहना चाहते थे, ''चूँकि आपने अपना क्रोध प्रदर्शित किया है अतएव हम सभ्य बन गये हैं। इसके पूर्व हम दुष्ट थे और दर्प से अन्धे होने के कारण आपको देख नहीं सके थे।''

**नमस्ते सर्वभूतात्मन्सर्वशक्तिधराव्यय ।**
**विश्वकर्मन्नमस्तेऽस्तु त्वां वयं शरणं गता: ॥ ४८ ॥**

शब्दार्थ

नम:—नमस्ते; ते—तुमको; सर्व—सभी; भूत—जीवों के; आत्मन्—हे आत्मा; सर्व—समस्त; शक्ति—शक्तियों के; धर—हे धारण करने वाले; अव्यय—हे अव्यय; विश्व—ब्रह्माण्ड के; कर्मन्—हे बनाने वाले; नम:—नमस्कार; ते—तुमको; अस्तु—हो; त्वाम्—तुमको; वयम्—हम; शरणम्—शरण लेने; गता:—आये हैं।

**हे समस्त जीवों के आत्मा, हे समस्त शक्तियों को धारण करने वाले, हे ब्रह्माण्ड के अव्यय स्त्रष्टा, हम आपको नमस्कार करते हैं और नमस्कार करते हुए आपकी शरण ग्रहण करते हैं।**

**तात्पर्य :** कौरवों को स्पष्ट रूप से अनुभव हो गया कि उनके जीवन तथा प्रारब्ध भगवान् के हाथों में थे।

श्रीशुक उवाच

**एवं प्रपन्नै: संविग्नैर्वेपमानायनैर्बल: ।**
**प्रसादित: सुप्रसन्नो मा भैष्टेत्यभयं ददौ ॥ ४९ ॥**

शब्दार्थ

श्री-शुक: उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; एवम्—इस प्रकार; प्रपन्नै:—शरणागतों द्वारा; संविग्नै:—अत्यन्त दुखी; वेपमान—हिलते हुए; अयनै:—घरों वाले; बल:—बलराम; प्रसादित:—शान्त हुए; सु—अत्यन्त; प्रसन्न:—शान्त तथा मृदुल; मा भैष्ट—मत डरो; इति—इस प्रकार कहकर; अभयम्—भय से छुटकारा; ददौ—दे दिया।

**शुकदेव गोस्वामी ने कहा : जिन कौरवों का नगर डगमगा रहा था और जो अत्यन्त कष्ट में होने से उनकी शरण में आ रहे थे, ऐसे कौरवों द्वारा स्तुति किये जाने पर बलराम शान्त हो गये और उनके प्रति कृपालु हो गये। उन्होंने कहा ''डरो मत।'' फिर उनके भय को हर लिया।**

**दुर्योधन: पारिबर्हं कुञ्जरान्षष्टिहायनान् ।**
**ददौ च द्वादशशतान्ययुतानि तुरङ्गमान् ॥ ५० ॥**
**रथानां षट्सहस्राणि रौक्माणां सूर्यवर्चसाम् ।**
**दासीनां निष्ककण्ठीनां सहस्रं दुहितृवत्सल: ॥ ५१ ॥**

शब्दार्थ

दुर्योधन:—दुर्योधन ने; पारिबर्हम्—दहेज के रूप में; कुञ्जरान्—हाथी; षष्टि—साठ; हायनान्—वर्ष आयु के; ददौ—दिया; च—तथा; द्वादश—बारह; शतानि—सौ; अयुतानि—दस हजार; तुरङ्गमान्—घोड़े; रथानाम्—रथों के; षट्-सहस्राणि—छ: हजार; रौक्माणाम्—सोने के; सूर्य—सूर्य ( जैसे ); वर्चसाम्—तेजवान्; दासीनाम्—दासियों के; निष्क—रत्नजटित हार; कण्ट्थीनाम्—जिनके गलों में; सहस्रम्—एक हजार; दुहितृ—अपनी पुत्री के लिए; वत्सल:—पितृ-स्नेह से युक्त।

**अपनी पुत्री के प्रति अत्यन्त वत्सल दुर्योधन ने उसे दहेज में १,२०० साठ वर्षीय हाथी,**

१,२०,००० घोड़े, ६,००० सूर्य जैसे चमकते सुनहरे रथ तथा १,००० दासियाँ दीं जो गलों में रत्नजटित हार पहने थीं।

प्रतिगृह्य तु तत्सर्वं भगवान्सात्वतर्षभः ।
ससुतः सस्नुषः प्रायात्सुहृद्भिरभिनन्दितः ॥ ५२ ॥

शब्दार्थ

प्रतिगृह्य—स्वीकार करके; तु—तथा; तत्—उसको; सर्वम्—समस्त; भगवान्—भगवान्; सात्वत—यादवों के; ऋषभः—प्रधान; स—सहित; सुतः—पुत्र; स—सहित; स्नुषः—पतोहू, पुत्रवधू; प्रायात्—प्रस्थान किया; सु-हृद्भिः—शुभचिन्तकों (कौरवों) द्वारा; अभिनन्दितः—विदा किया गया।

यादवों के प्रमुख भगवान् ने इन सारे उपहारों को स्वीकार किया और तब अपने पुत्र तथा अपनी पुत्रवधू सहित वहाँ से प्रस्थान किया और उनके शुभचिन्तकों ने उन्हें विदाई दी।

ततः प्रविष्टः स्वपुरं हलायुधः
समेत्य बन्धूननुरक्तचेतसः ।
शशंस सर्वं यदुपुङ्गवानां
मध्ये सभायां कुरुषु स्वचेष्टितम् ॥ ५३ ॥

शब्दार्थ

ततः—तब; प्रविष्टः—प्रवेश करके; स्व—अपने; पुरम्—नगर में; हल-आयुधः—हल ही जिनका हथियार है, बलराम; समेत्य—मिलकर; बन्धून्—अपने सम्बन्धियों को; अनुरक्त—उनसे अनुरक्त; चेतसः—हृदयों वाले; शशंस—बतलाया; सर्वम्—हर बात; यदु-पुङ्गवानाम्—यदुओं के नायकों के; मध्ये—बीच में; सभायाम्—सभा के; कुरुषु—कुरुओं में; स्व—अपना; चेष्टितम्—कार्य।

तब भगवान् हलायुध अपने नगर (द्वारका) में प्रविष्ट हुए और अपने सम्बन्धियों से मिले जिनके हृदय उनसे अनुराग में बँधे थे। सभाभवन में उन्होंने कुरुओं के साथ हुई प्रत्येक घटना यदुओं से कह सुनाई।

अद्यापि च पुरं ह्येतत्सूचयद्रामविक्रमम् ।
समुन्नतं दक्षिणतो गङ्गायामनुदृश्यते ॥ ५४ ॥

शब्दार्थ

अद्य—आज; अपि—भी; च—तथा; पुरम्—नगर; हि—निस्सन्देह; एतत्—यह; सूचयत्—सूचना देता है; राम—बलराम के; विक्रमम्—पराक्रम को; समुन्नतम्—उठा हुआ; दक्षिणतः—दक्षिण की ओर; गङ्गायाम्—गंगा में; अनुदृश्यते—दिखाई देता है।

आज भी हस्तिनापुर नगर गंगा के तट पर दक्षिणी दिशा में उठा हुआ दिखता है। इस तरह यह भगवान् बलराम के पराक्रम का सूचक है।

**तात्पर्य :** श्रील प्रभुपाद लिखते हैं: ''क्षत्रिय राजाओं में अधिकतर यह प्रथा थी कि विवाह के पूर्व वर तथा वधू पक्ष के लोगों के बीच किसी प्रकार का युद्ध हो। जब साम्ब ने बलात लक्ष्मणा का हरण किया था तब कुरुवंश के प्रौढ़ सदस्य यह देखकर प्रसन्न हुए थे कि वह सचमुच उसके योग्य वर था। फिर भी व्यक्तिगत शक्ति को परखने के लिए उन्होंने उससे युद्ध किया और युद्ध के नियमों का अनादर करते हुए उसे बन्दी बना लिया। जब यदुवंश ने साम्ब को कौरवों के बन्धन से मुक्त कराने का निश्चय किया, तो स्वयं बलराम समझौता कराने आये। वे एक बलशाली क्षत्रिय थे अतएव उन्होंने कौरवों को तत्काल ही साम्ब को मुक्त करने का आदेश दिया। इस आदेश से कौरवों ने स्वयं को बाहरी तौर पर अपमानित समझा अत: उन्होंने बलराम की शक्ति को चुनौती दे दी। वे केवल इतना चाहते थे कि बलराम अपनी अचिन्त्य शक्ति का प्रदर्शन करें। इस प्रकार अतीव प्रसन्नतापूर्वक उन्होंने अपनी कन्या साम्ब को दे दी और सारा मामला तय हो गया। दुर्योधन अपनी पुत्री लक्ष्मणा को बहुत चाहता था अतएव उसने बड़ी धूमधाम के साथ उसका विवाह साम्ब के साथ कर दिया...कौरव पक्ष की ओर से अपने भव्य स्वागत के बाद बलराम अत्यन्त सन्तुष्ट हो गये और वे नवविवाहित दम्पत्ति को साथ लेकर अपनी राजधानी द्वारका के लिए चल पड़े।

विजयी होकर बलराम द्वारका पहुँचे जहाँ उनकी भेंट अनेक नागरिकों से हुई। वे सभी उनके भक्त तथा मित्र थे। जब वे सब एकत्र हो गये तो बलराम ने विवाह की सारी कथा कह सुनाई। वे यह सुनकर चकित थे कि बलराम ने किस तरह हस्तिनापुर को कंपित कर दिया।''

*इस प्रकार श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध के अन्तर्गत 'साम्ब का विवाह' नामक अरसठवें अध्याय के भक्तिवेदान्त स्वामी श्रील प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।*